328hi24

24
मनोरोग चिकित्सा

पिछले पाठ में मनोवैज्ञानिक विकारों के बारे में बताया गया था। मनोवैज्ञानिकों ने असामान्य व्यवहार के कारणों को समझाने और उनके समाधान के उत्तमतम समाधान खोजने का प्रयास किया है। ऐसे चार मुख्य प्रतिमान हैं जो मनोवैज्ञानिक विकारों और उनकी चिकित्सा से संबंधित हैं। इन्हें चिकित्सीय, मनोगतिक, व्यवहारपरक और मानवीय कहते हैं।

इस पाठ में असामान्य व्यवहार की चिकित्सा के लिए कुछ महत्वपूर्ण उपागमों का वर्णन किया गया है जिन्हें मनोचिकित्सा कहा गया है। मनोचिकित्सा शब्द का प्रयोग उस प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए किया गया है जिसमें एक प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक पीड़ित व्यक्ति को सामान्य व्यवहार में सहायता करता है। मनोवैज्ञानिक सामान्यतः उपर्युक्त उपागमों में से एक का प्रयोग करता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप कर सकेंगे:

- मनोचिकित्सा के उद्देश्य का स्पष्टीकरण;
- मनोचिकित्सा के प्रमुख प्रतिमानों का वर्णन; और
- मनोचिकित्सा के प्रत्येक प्रतिमान के गुणों और दोषों का स्पष्टीकरण।

24.1 चिकित्सकीय प्रतिमान

चिकित्सकीय प्रतिमान के अनुसार असामान्यता शारीरिक कारणों से घटित होती है और यह एक प्रकार का रोग है, जिस का इलाज दवाओं के द्वारा किया जा सकता है। यह

उपागम अनुवांशिक और तंत्रिका संप्रवाहकों के असंतुलन की भूमिका की जाँच करता है। चिकित्सकीय प्रतिमान में प्रयोग किये जाने वाले चिकित्सात्मक उपागमों को दैहिक चिकित्सा कहा जाता है। जो तीन दैहिक चिकित्सा आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं वे हैं, रसोचिकित्सा, विद्युत सापेक्षीय चिकित्सा (इलेक्ट्रो कन्वल्जिवथिरैपी) (ई.सी.टी.) और मनोशल्य चिकित्सा (साइको सर्जरी)

विद्युत सापेक्षीय चिकित्सा के अंतर्गत मनोविकार से पीड़ित व्यक्ति के सिर में विद्युताग्र के द्वारा थोड़े समय के लिए विद्युत धारा प्रवाहित करना आता है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति के लिए विद्युत सापेक्षीय चिकित्सा में दो विद्युताग्र कनपटी क्षेत्र में लगाये जाते हैं और लगभग 200 मिलियाम्प 110 वोल्ट पर एक धारा एक विद्युताग्र से दूसरे विद्युताग्र तक 4-5 सेकंड तक चलाई जाती है। विद्युत सापेक्षीय चिकित्सा का प्रयोग अवसाद, दोहरा विकार (उन्माद–अवसाद) और अनियंत्रित इच्छा के सम्मोही विकार की चिकित्सा के लिए किया जाता है।

मनोशल्य चिकित्सा में मनोवैज्ञानिक कार्यशैली बदलने के लिए मस्तिष्क की शल्यक्रिया करना आता है। यह अंतिम उपाय है इसका प्रयोग आक्रमक मनोविदलन जैसे सीमांतक मनोवैज्ञानिक गड़बड़ी में किया जाता है।

सर्वसामान्य और प्रभावी दैहिक उपागम रसोचिकित्सा है जिसमें पीड़ित व्यक्ति को दवाइयाँ देना आता है। दवायें तीन प्रकार की होती है मनोविदलन और उन्माद की चिकित्सा के लिए मुख्य रूप से न्यूरोलिप्टिक (मुख्य शांत करने वाली या मनस्तापी विरोधी औषधियाँ) का प्रयोग करते हैं। अवसाद विरोधी दवाओं का प्रयोग अवसाद सहित अनेक विकारों में किया जाता है। चिंता विरोधी (छोटे ट्रैन्क्वीलाइजर) मुख्य रूप से चिंता विकार में प्रयोग होते हैं।

पाठगत प्रश्न 24.1

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

1. चिकित्सीय प्रतिमान में प्रयुक्त उपचारात्मक उपागमों को ——————————— उपचार कहते हैं।
2. वर्तमान में तीन दैहिक उपचारों ————— ————— और ——————— का प्रयोग किया जाता है।
3. मुख्य रूप से मनोविदलन के उपचार में ———————— प्रयोग किये जाते हैं।
4. अवसाद के उपचार में —————————— प्रयोग होते हैं।
5. चिंताविरोधी औषधियों का प्रयोग मुख्यरूप से —————————— की गड़बड़ी में होता है।

24.2 मनोगतिक चिकित्सा

जैसा आपने पहले पढ़ा है कि सिग्मण्ड फ्रायड का मनोगतिक प्रतिमान मनोवैज्ञानिक आंतरिक कारकों के कारण पैदा होने वाले मानसिक विकारों को देखता है जो मूलतः बचपन के असमाधानित अचेतन द्वंद्व होते है। इस प्रतिमान में चिकित्सा को मनोविश्लेषण कहा जाता है। मनोविश्लेषण का उद्देश्य अचेतन द्वंद्वों को समझना होता है जो किसी व्यक्ति के मानसिक विकार के लिए उत्तरदायी होते हैं और तब व्यक्ति को उनके बारे में सचेत करना है। इससे व्यक्ति अपनी समस्याओं का प्रभावी ढंग से हल कर सकता है। मनोविश्लेषण में सामान्यतः मुक्त साहचर्य तकनीक प्रयोग की जाती है। इसका मूल उपक्रम है कि रोगी के मन में जो कुछ आता है वह कह देता है क्योंकि इसमें अहं की सेंसर करने या आतंकी अचेतन अनुक्रियाओं को बाधित करने की भूमिका को पार किया जाता है। मनोविश्लेषण का अंतिम लक्ष्य व्यक्तित्व में बड़ा परिवर्तन लाना है जिससे लोग बिना रक्षा युक्तियाँ प्रयोग किये हुए समस्याओं का यथार्थ तरीके से हल निकालने में समर्थ हो सकें। कभी–कभी सम्मोहन और स्वप्न व्याख्या का भी उपचार प्रक्रिया में प्रयोग किया जाता है।

24.3 व्यवहारपरक प्रतिमान

जैसा कि पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि व्यवहारपरक प्रतिमान में विकारों को कुसमंजित व्यवहार के रूप में देखा जाता है। यह सुझाव देने वाले वाटसन प्रथम व्यक्ति थे कि दुर्भीत (किसी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति जैसे चूहे या सर्प इत्यादि) को अनुकूलन तकनीक से स्पष्ट किया जा सकता है। व्यवहारपरक उपचार में क्लासिकी अनुकूलन सिद्धांत प्रयोग होता है, जबकि व्यवहार परिवर्तन तकनीक क्रिया प्रसूत अनुकूलन पर आधारित होती है (आपको छठे पाठ में अनुकूलन के प्रकार बताये गये हैं।

व्यवहारपरक उपचार में माना जाता है कि अगर कुसमंजित व्यवहार क्लासिकी अनुकूलन द्वारा अर्जित किए जा सकते हैं, तो उन्हें उसी सिद्धांत से मिटाया भी जा सकता है। व्यवहारपरक उपचार के तीन उपागम हैं – अंतःस्फोटक चिकित्सा, फ्लडिंग और व्यवस्थित निःसंवेदीकरण। अंतःस्फोटक चिकित्सा और फ्लडिंग इस संप्रत्यय पर आधारित हैं कि यदि भय अनुक्रिया उत्पन्न करने वाले उद्दीपन (जैसे सर्प) यदि बिना किसी अरूचिकर अनुभव के बार–बार उपस्थित होते हैं तो ये भय उत्पन्न करने वाली शक्ति खो देते हैं।

अंतःस्फोटक चिकित्सा में चिकित्सक सुरक्षित कक्ष में व्यक्ति के सामने बार–बार भय उत्पन्न करने वाली वस्तु की मानसिक प्रतिमायें प्रस्तुत करता है। व्यक्ति से कहा जाता है कि वह भय उत्पन्न करने वाली वस्तु के अधिकतम भयावह रूप की कल्पना करे। कई प्रयासों के बाद वह उद्दीपन चिंता पैदा करने वाली शक्ति खो देता है।

फ्लडिंग में व्यक्ति को भय या चिंता उत्पन्न करने वाली परिस्थिति का सामना करने को विवश किया जाता है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति ऊँचाई से डरता है, तो उसे एक

ऊँचे भवन की छत पर खड़े रहने को विवश किया जा सकता है। कुछ लोगों पर यह उपागम प्रभावी होता है और परिस्थिति के भय को मिटा देता है। अंतःस्फोटक और फ्लडिंग चिकित्सा सीमित प्रभाव रखती हैं। व्यवस्थित निःसंवेदीकरण इससे अच्छा उपागम है।

व्यवस्थित निःसंवेदीकरण में व्यक्ति को दृश्यों या घटनाओं की एक श्रृंखला बनाने को कहा जाता है जो व्यक्ति को धीरे–धीरे भय उत्पन्न करने वाली वस्तुओं या परिस्थितियों की ओर ले जाती हैं। उदाहरण के लिए शवों से डरने वाले व्यक्ति को एम्बुलेंस की कल्पना करने को कहा जा सकता है और तत्पश्चात विश्राम पर ध्यान दिया जाये। तब उसे शवदाहगह के पास जाने को कहा जा सकता है और अंत में (यद्यपि इसके बीच में कुछ और कदम हैं) व्यक्ति को शव के निकट जाने को कहा जा सकता है और उसी समय विश्राम पर ध्यान दिया जाये।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि क्लासिकी अनुकूलन पर आधारित उपागमों के अतिरिक्त कुछ चिकित्सायें क्रिया प्रसूत अनुकूलन पर आधारित हैं जिन्हें व्यवहार परिवर्तन कहा गया है। वैसे तो क्रियाप्रसूत अनुकूलन पर आधारित बहुत सी चिकित्सायें हैं, किंतु सभी में मूल रूप से तीन चरण शामिल हैं। पहला चरण अवांछित या कुसमायोजित व्यवहार की पहचान करना है। दूसरे चरण में कुसमायोजित व्यवहार को बनाये रखने वाले पुनर्बलनकों की पहचान शामिल है। अंतिम चरण में पर्यावरण को इस प्रकार पुनःसंचरित करना जिससे फिर से व्यवहार को पुनर्बलन न प्राप्त हो।

दूसरा रास्ता अवांछित व्यवहार को समाप्त करने के लिए उन उद्दीपनों को हटाना है जो उसे बनाये रखते हैं। यह विचार इस बात पर आधारित है कि उद्दीपन को हटाने से वह व्यवहार समाप्त हो जायेगा जो इससे पहले पुनर्बलित हुआ था। दूसरी विधि में उद्दीपन का प्रयोग होता है जिसमें स्वैच्छिक कुसमंजित व्यवहार के लिए दण्ड के रूप में निषेधात्मक प्रभाव होता है। सकारात्मक पुनर्बलन देकर वांछित व्यवहार को बढ़ाने के लिए क्रिया प्रसूत अनुकूलन का भी प्रयोग किया जा सकता है जबकि वांछित व्यवहार किया जा रहा हो। उदाहरण के लिए यदि हम चाहते हैं कि एक बच्चा प्रतिदिन अध्ययन करे, हम उसे जब भी वह अध्ययन करे उसकी रूचि के टीवी कार्यक्रम को देखने की अनुमति देकर यूँ कहें अधिक से अधिक एक घंटे के लिए, उसे पुनर्बलित कर सकते हैं।

हाल के वर्षों में मनोचिकित्सक का एक सामाजिक अधिगम उपागम उभर कर आया है। यह प्रतिमान व्यक्तित्व के व्यवहार एवं संज्ञानात्मक प्रतिमान के मध्य कड़ी के रूप में है। संज्ञानात्मक उपागमों की दृष्टि में मानसिक विकार अतार्किक विश्वासों या त्रुटिपूर्ण सोच के कारण उत्पन्न होते हैं। चिकित्सा के अंतर्गत संज्ञानात्मक पुनर्रचना या सोचने के ढंग में परिवर्तन आते हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक व्यक्ति विश्वास करता है कि यदि बिल्ली उसका रास्ता काटती है तो समस्यायें पैदा हो जायेंगी, ऐसा वह अनेक बार अनुभव कर सकता है जब तक कि उसे यह अनुभव नहीं हो जाता कि बिल्ली और निषेधात्मक घटनाओं के मध्य कोई संबंध नहीं है, इस प्रकार उसकी सोच में परिवर्तन हो जाता है।

पाठगत प्रश्न 24.2

नीचे दिये रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजियेः

1. मनोविश्लेषण में बहुत अधिक प्रयोग किये जाने वाले उपागम को मुक्त ———————— कहते हैं।
2. मनोविश्लेषण का उद्देश्य ——————— द्वंद्वों को समझना है जो व्यक्ति के असामान्य व्यवहार के लिए उत्तरदायी होते हैं।
3. मनोविश्लेषण में प्रयोग किये जाने वाले अन्य उपागम —————— और —————— व्याख्या है।
4. चिकित्सा का व्यवहारपरक प्रतिमान ———————— के सिद्धांत का प्रयोग करता है।
5. व्यवहारपरक चिकित्सा पर आधारित तीन उपागम ———— ———— और ——————— हैं।
6. व्यवहारपरक परिवर्तन उपागम ———————— अनुकूलन पर आधारित हैं।

24.4 मानवतावादी चिकित्सा

व्यक्तित्व के मानवतावादी दष्टिकोण के अनुसार मूलतः लोग अच्छे होते हैं और विकास की खोज करते हैं तथा अच्छे जीवन स्तर के लिए कार्य करते हैं। सभी लोगों को आत्म सम्मान और जीवन को स्वरूचि के अनुसार ढालने की आवश्यकता होती है। मानव विशिष्ट इसलिए हैं क्योंकि उनमें स्वतंत्र इच्छा तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करने की स्वाभाविक आवश्यकता होती है। अपनी विभवता को प्रत्यक्ष करने की आवश्यकताओं को आत्म प्रत्यक्षीकरण की दिशा में मूल अन्तर्नोद कहा जाता है।

मानवतावादी दष्टि में मनोवैज्ञानिक विकार वाह्य वातावरण द्वारा व्यक्तिगत विकास की दिशा में बढ़ने में बाधा उत्पन्न करने के कारण घटित होते हैं। हमारे आस–पास के लोग अपनी अपेक्षाओं द्वारा हम पर दबाव डालते हैं और हमें वैसा स्वीकार नहीं करते जैसे कि हम हैं। यदि हमारे आस–पास का कोई व्यक्ति हमें बिना शर्त के सकारात्मक सम्मान देता है तो मुश्किल से हमारे होने और हमारे चाहने में कोई अन्तर होगा। इसका अर्थ हुआ कि आदर्श आत्म और यथार्थ आत्म में बहुत कम अंतर होता है। इससे हमारे कार्य करने में बहुत बड़ा सामंजस्य पैदा होता है जिसे ससाधकत्व कहते हैं।

मानवतावादी चिकित्सा का उद्देश्य चिकित्सक द्वारा बिना शर्त के सकारात्मक सम्मान का वातावरण निर्माण करके रोगी को उसकी वास्तविक भावनाओं और आंतरिक आत्म के संपर्क में आने का अवसर प्रदान करना है। तब रोगी को अधिक दायित्व संभालना और अपनी अंतर आत्मा की चाह के अधिक अनुकूल रहना होता है। अंत में यह विकास और जीवन में अधिक संतोष की ओर ले जाता है।

पाठांत अभ्यास

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिये :

1. मनोविश्लेषण का मूल उद्देश्य एवं प्रक्रम का वर्णन कीजिये।
2. अन्तःविस्फोटक चिकित्सा, फलडिंग और व्यवस्थित निःसंवेदीकरण में प्रयुक्त उपागमों में भेद रेखांकित कीजिये।
3. वर्तमान में प्रयोग की जाने वाली तीन दैहिक चिकित्साओं – रसोचिकित्सा, विद्युत सापेक्षीय चिकित्सा और मनोशल्य–चिकित्सा, का संक्षेप में वर्णन कीजिये।
4. मानवतावादी मनोचिकित्सा में प्रयोग किए जाने वाला मूल उपागम क्या है?

आपने क्या सीखा

- औषधीय चिकित्सा प्रतिमान मनोवैज्ञानिक विकारों की चिकित्सा में ज्यादातर दवाओं और कभी–कभी विद्युत आघात और शल्यक्रिया में विश्वास करता है।
- मनोविश्लेषण वह मनोचिकित्सा है जो व्यक्ति के मन में अचेतन द्वंद्वों को पूर्व जीवन अनुभवों से उद्घाटित करती है और व्यक्ति को उनको चेतन रूप में स्वीकार करने में सहायता करती है।
- व्यवहार परक चिकित्सा क्लासिकी और क्रियाप्रसूत अनुकूलन सिद्धांतों पर आधारित है।
- मानवतावादी चिकित्सा व्यक्ति को अपनी गहन आवश्यकताओं और कामनाओं के संपर्क में आने में सहायता देती है और तब वे अपनी आंतरिक और यथार्थ प्रकति के अधिक अनुकूल रहने का दायित्व लेते हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

24.1

1. दैहिक 2. रसोचिकित्सा, विद्युत सापेक्षीय चिकित्सा, मनोशल्य चिकित्सा
3. न्यूरोलिप्टिक 4. अवसाद विरोधी 5. चिंता विरोधी

24.2

1. मुक्त साहचर्य तकनीक 2. अचेतन
3. सम्मोहन और स्वप्न व्याख्या 4. क्लासिकी अनुकूलन
5. अंतः स्फोटक चिकित्सा, फलडिंग और व्यवस्थित निःसंवेदीकरण
6. प्रसूत अनुकूलन